एस्ट्रो वास्तु एनेलिसिस
..... कॉलेज
.....

कैम्पस के बारे में

कैम्पस का विकास दो भागों में हुआ है।

1. पूर्वी भाग की रचना पहले आई है, बाद में पश्चिम दिशा में नया भू-भाग इसमें जोड़ा गया है, जो कि आज की तारीख में खेल मैदान और उसके दक्षिण में स्टेडियम है।
2. कॉलेज का भूखण्ड वर्गाकार नहीं है। इसके अग्नि कोण में कटान है और नैर्ऋत्य कोण में भी भूमि कटी हुई है। कटान से बाहर की भूमि किसी अन्य के स्वामित्व में है। यह गंभीर वास्तु दोष है।
3. निर्माण के क्रम में जो भवन पहले बनाए गए हैं वे अब सम्पूर्ण भूखण्ड के ईशान कोण में पड़ते हैं। पूर्व दिशा वाले भूखण्ड में भी जो निर्माण हैं वे अब दोषपूर्ण हो गये हैं। ऐसा इस कारण से हुआ है कि खेल मैदान वाला भाग जैसे ही पहले वाले भूखण्ड से जुड़ा है सम्पूर्ण भूखण्ड का केन्द्र बदल गया है इस कारण से हर भवन के मध्य स्थान से कोण बदल गये हैं। सम्पूर्ण भूखण्ड का केन्द्र बदल गया है, जिसके कारण ऐसा हुआ है।
4. अब कॉलेज का उत्तरी द्वार भी इतना शुभ नहीं रहा है जितना पहले था तथा एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक भी कमजोर पड़ गया है।
5. सम्पूर्ण भूखण्ड में आमतौर से पूर्व दिशा खाली रखी जाती है और उत्तर में भी अधिक निर्माण नहीं किये जाते। अब ये दोनों स्थान भरे हुए हैं और जो वास्तुदोष पहले नहीं था, भूखण्ड का आकार बड़ा होने के बाद अब वास्तुदोष में बदल गया है। पूर्व दिशा में एकमात्र सम्भावना यह है कि बाहर सड़क होने के कारण पूर्व दिशा के शानदार वास्तु द्वार अभी भी निकाले जा सकते हैं।
6. अग्निकोण व नैर्ऋत्य कोण के कटान अब दुरुस्त किये जाना सम्भव नहीं है और अन्य के स्वामित्व की भूमि में संशोधन किए जाना सम्भव नहीं है। फिर भी कुछ अन्य उपाय किये जा सकते हैं।
7. पश्चिम दिशा की बाहरी दीवार बदगुणिया है और वहाँ से बड़ी सफलता लाये जाने के उपाय सम्भव है। कॉलेज के पश्चिमी भाग में कुछ वास्तु संशोधन कराये जाने का स्कोप अभी सुरक्षित है।

.....

.....

एस्ट्रो एनेलिसिस

1. इस समय आकाशीय भ्रमण के कारण कुछ ग्रह कॉलेज के पश्चिमी भाग को प्रभावित कर रहे हैं। राहु, शनि व मंगल तीनों ही कन्या व तुला राशि को प्रभावित कर रहे हैं। इस समय नुकसान दे रहे हैं। वास्तु संशोधन के बाद लाभ देने लगेंगे।
2. नवम्बर 2014 के बाद शनिदेव वृश्चिक राशि में आ जाएंगे जहां वह ढाई वर्ष रहेंगे। यह पश्चिम से दक्षिण पश्चिम के बीच का स्थान है। इस दिशा में निर्माण कार्य की संभावना है व अधिक चहल-पहल रहेगी। वर्तमान में राहु भी पश्चिम की दिशा में है। अत: गतिविधियाँ बढ़ जाएंगी।
3. यदि पश्चिम दिशा व उसके आस-पास निर्माण कराए जाएं तो ग्रह प्रसन्न होंगे व लाभ देंगे। निर्माण वास्तु सम्मत होने चाहिये।
4. बृहस्पति 19 जून 2014 के बाद कर्क राशि में आ जाएंगे। यह कॉलेज की उत्तर दिशा है। यहां भी बृहस्पति ग्रह के प्रभाव से कुछ संशोधन होंगे। उत्तर दिशा बलवान होकर धन-लाभ कराती है। विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती है। गुणवत्ता बढ़ती है। संस्था में लक्ष्मी आती है।
5. बृहस्पति ग्रह का आकाशीय भ्रमण अगले 3-4 वर्षों तक उत्तर से उत्तर पश्चिम व फिर पश्चिम दिशा को प्रभावित करेगा। इससे खेलकूद व अनुसंधान संबंधित गतिविधियों में तेजी आएगी। बाहर की संस्थाओं से सहयोग बढ़ेगा।
6. 2017-18 महत्वपूर्ण होगा जब राहु व गुरु कॉलेज की उत्तर पश्चिम दिशा को प्रभावित करेंगे।
7. राहु श्रेष्ठ लाभ देंगे जब वे 4 वर्ष बाद कॉलेज की उत्तर दिशा से भ्रमण करेंगे। वह तकनीकी, गुणवत्ता व संस्था की ख्याति के लिहाज से अच्छा समय होगा।
8. वर्तमान प्रशासकों की जन्म पत्रिका 2017 में कुछ महत्वपूर्ण गतिविधियों का संकेत देती है। यह आगे बढ़ने का वर्ष है। कॉलेज की दक्षिण दिशा में भी नई गतिविधियों के संकेत हैं।

इन्टरनेशनल वास्तु एकेडमी
INTERNATIONAL VASTU ACADEMY
IMPARTING EDUCATION IN VEDIC ASTROLOGY & ARCHITECTURE

.....
.....

Vastu Potential Report

1. कॉलेज की कुल जितनी भूमि है उसमें वास्तु संशोधन करके कुल टर्न-ऑवर बढ़ाया जा सकता है। वास्तु पुरुष के कुछ मर्म स्थान पीड़ित हैं और उन स्थानों पर जो निर्माण हैं वह कॉलेज की सफलता में बाधा डाल रहे हैं। इन मर्म स्थानों में यदि वास्तु संशोधन कर लिए जाए तो अपेक्षित परिणाम निकल सकते हैं।
2. प्रारंभ में कॉलेज को अधिक सफलता मिली होगी परंतु जब से पश्चिमी दिशा वाला खेल मैदान कॉलेज से जुड़ा है। कॉलेज की कुल क्षमता में कमी आ गई होगी। इससे लाभ कम हुआ है, विद्यार्थियों की संख्या और गुणवत्ता पर भी असर आया है। इस स्थिति को बदला जा सकता है। यदि कॉलेज की कुल क्षमता, फीस का स्तर या आय को बढ़ाना है तो वास्तु संशोधन कारगर सिद्ध हो सकता है।
3. अगले 4-5 वर्ष में कॉलेज का टर्न-ऑवर 100 करोड़ से ऊपर ले जाया जा सकता है परंतु उसके लिए व्यापक वास्तु संशोधन करना होगा। इनमें निर्माण कार्य भी शामिल है। कम से कम 6 स्थान ऐसे हैं जहां वास्तु संशोधनों की आवश्यकता है। जिन्हें करने के बाद कॉलेज के स्टेटस पर असर आएगा। उन सबका विवरण वास्तु संशोधन प्रस्तावों पर दिया गया है।
4. कॉलेज जब बना तब इसकी वास्तु संरचना ज्यादा अच्छी थी, पर जैसे ही इसमें पश्चिम दिशा वाला भाग जुड़ा है वर्तमान प्रशासनिक भूखण्ड ईशान कोण में आ गए हैं। इसी तरह से पहले जो मुख्य द्वार बना, वह अब दोष पूर्ण दिशा में हो गया है और कॉलेज के भूखण्ड के नए केन्द्र से देखने पर कोण बदला हुआ नजर आता है। इस कारण से कॉलेज की संभावनाओं में कमी आई है, परंतु सौभाग्य से अभी भी अच्छी संभावना बची हुई है और कुछ संशोधन करके स्थिति को संभाला जा सकता है तथा लाभ के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं।

.....
.....

वास्तु संशोधन प्रस्ताव

1. उत्तर दिशा में प्रशासनिक भवन में जाने के लिए जो द्वार बना हुआ है वह सही स्थान पर नहीं है। उसमें परिवर्तन की आवश्यकता है। वह द्वार अगर बन्द ना हो सके तो भी नए स्थान पर लाया जा सकता है। नक्शे में जो B दिखाया गया है वहां एक नया द्वार बनाया जाए एवं A नामक द्वार को बन्द कर दिया जाना श्रेष्ठ है।

इसको क्रियान्वित करने के लिए दो प्रस्ताव दिए गए हैं।

i. उत्तर दिशा का वर्तमान द्वार बनाए रखा जाए और B स्थान पर 16+4 फीट का नया द्वार खोल दिया जाए।

ii. द्वार A चिनाई कर के बंद कर दिया जाए और B स्थान पर एक नया द्वार 16+4 फीट का बनवा दिया जाए तथा C स्थान पर एक अन्य गेट बना दिया जाए जिसका उद्देश्य खेल के मैदान में सीधा प्रवेश देना है। यह वास्तु नियमों के अनुकूल है। उत्तर दिशा में कुल मिलाकर अधिकतम दो द्वार हो सकते हैं।

2. पश्चिम दिशा जब खाली रहती है या कम निर्माण होता है तो सम्पूर्ण भूखण्ड दैत्य पृष्ठ की श्रेणी में आ जाता है और धीरे-धीरे संस्था के प्रभाव में कमी आने लगती है। शास्त्रों के अनुसार अगर इसे गज पृष्ठ श्रेणी में लाया जाए तथा इसके प्रभाव को पहले से अधिक बढ़ाया जाए तो इसके लिए कॉलेज के पश्चिमी भाग में खेल मैदान में निर्माण कराया जाए। जिसकी ड्राईंग संलग्न की जा रही है। इसका 3D लुक भी दिखाया जा रहा है।
   प्रस्ताव 1 व 2 की 3D भी संलग्न किया जा रहा है।
   वर्तमान खेल मैदान को एक मिनी स्टेडियम का रूप दिया जाकर फर्स्ट फ्लोर के ऊपर जाकर क्लास रूम या लेबोरेटरी का स्थान निकाला जा सकता है जिससे वास्तु दोष दब जाएंगे और कॉलेज क्षमता में वृद्धि होगी।
3. पश्चिम दिशा में वर्तमान में जो D द्वार है उसमें थोड़े संशोधन की आवश्यकता है संशोधन से संबंधित नाप-जोख संलग्न की जा रही है।
4. दक्षिण दिशा में अतिरिक्त विस्तार को पार्टीशन करके बाहर निकालना है। नींव 3 फीट गहरी होनी चाहिए।

मर्म स्थान की सूची -

x स्थान पर जो मर्म स्थान है उसे ठीक किया जाना संभव नहीं है वहां भारी निर्माण है।

y स्थान पर जो वास्तु पुरुष का मर्म स्थान है, उस में साधारण से प्रयास से ही अंतर लाया जा सकता है।

z गर्ल्स हास्टल में यह मर्म स्थान जिस स्थान पर है उसे ठीक किया जाना संभव नहीं है।

xx नामक स्थान पर मर्म स्थान भी ठीक किया जा सकता है परंतु उसके लिए बाद में कभी प्रयास किया जा सकता है।

yy नामक स्थान पर जो मर्म स्थान है वह प्रिंसिपल या डायरेक्टर के आवास से पूर्वी भाग में पड़ता है और संशोधन किया जा सकता है। इस मकान का ओरिएंटेशन पश्चिम की तरफ किया जा सकता है तथा पूर्वी दिशा का थोड़ा सा निर्माण हटाया जा सकता है। करीब 10' लॉन कम हो जाएगा।

E नामक स्थान पर नया द्वार खोला जा सकता है। अगर वह द्वार वास्तु संबंधित स्थान पर खोल लिया जाए तो कॉलेज की प्रतिष्ठा अचानक उठने लगेगी और धीरे-धीरे कॉलेज में कोई विशेषज्ञ श्रेणी विकसित होने लगेगी। यह द्वार तथा उत्तर दिशा में खोला हुआ नया द्वार राजयोग देने वाला है। जिसका अर्थ यह है कि या तो कॉलेज की मान्यता और प्रभाव सरकार की नजर में बढ़ेगा तथा दूसरा यह कि कॉलेज से संबंधित पदाधिकारियों को राजयोग प्राप्त करने में दैवीय मदद मिलने लगेगी।

5. पुराना कुंआ यदि चालू है, बंद करा देना चाहिए। इसे भरवा देना चाहिए।
6. यदि संभव हो तो अगले एक वर्ष में शंकु स्थापना और वास्तु पुरुष की स्थापना कराई जा सकती है। यह कर्मकाण्ड का विषय है। दोनों यंत्र अभिमंत्रित करके भूमि में नीचे गाड दिए जाएंगे। यह स्थिर लक्ष्मी का प्रयोग है।

सतीश शर्मा
(अध्यक्ष)
इंटरनेशनल वास्तु एकेडमी